मैं जागूँ नींद न आवै, मेरी अंखियन मोहन करकै री।।

जब यह सबरौ जग सोवै है
एकहु पंछी नाय जागै है
ये छाती इक संग धरकै री, मैं जागूँ नींद..।
पनघट पै छैला आय अर्‌यौ
देखत ही मोपै गाज पर्‌यौ
उंचवावै गगरी भर कै री, मैं जागूँ नींद..।
वा दिन की कहा कहूं सजनी
जब दान लियौ वह रूप धनी
वह पटुका पीरौ फरकै री, मैं जागूँ नींद..।
थोरे में बहुत समझ लै री
मोय चैन न नेकहुं सुन लै री
जियरा यह रस में गरकै री,मैं जागूँ नींद..।।

------o------

अरि मेरे दोऊ नैनन कौ तारौ मनमोहन मुरली वारौ।।

नन्द गाँव कौ चन्दा मोहन
ब्रज कौ है उजियारौ, मनमोहन..।
नन्द बाबा कौ कुँवर लाड़िलौ
जसुमति राज दुलारौ, मनमोहन..।
रंग रंगीले सखा संग लै
धूम मचावनहारौ, मनमोहन..।
रास रसीली सखियन के संग
रास रचावनहारौ, मनमोहन..।
जब जब भीर परी ब्रज ऊपर
ब्रजवासिन कौ रखवारौ, मनमोहन..।
रसिया बड़ौ रूप कौ लोभी
राधा प्रान पियारौ, मनमोहन..।।

------o------

अरि बिछुर गयौ मन कौ प्यारौ
कहाँ छिप गयौ बंसी वारौ।।

कुञ्ज गली वृन्दावन ढूंढ्यो
अरि मैंने ढूंढ्यो गोकुल सारौ, कहाँ छिप..।
सिर पै याके मोर पखौआ
अरि ये तो कानन कुण्डल वारौ,कहाँ छिप..।
देखौ री याके बड़े बड़े नैना
अरि ये तो अँखियन कज़रा वारौ,कहाँ छिप.।
कण्ठ में याके कठुला सोहै
अरि ये तो फूलन माला वारौ, कहाँ छिप..।
मुख में याके मुरली सोहै
अरि ये तो माथे चन्दन वारौ, कहाँ छिप..।
अंग में याके पीरौ जामा
अरि ये तो पीरे पटुका वारौ, कहाँ छिप..।
पीरी धोवती तन पै सोहै
अरि ये तो कमर काछनी वारौ, कहाँ छिप..।
पायन याकै नूपुर सोहै
अरि ये तो चाल चलै मतवारौ, कहाँ छिप..।।

मोहन की प्यारी अंखियाँ बिन देखे रह्यो न जाय।।

पतरी रेख लगी कजरा की
बलि-बलि जाऊँ तिरछी नज़र की
मुसक-मुसक मेरौ मन मोह्यो, ठौर मरि गई माय।
देखत ही कियौ जादू टोना
अब तो होय गयो जो होना
देखत ही मोय बिजरी मारी, जीऊँगी कै नाय।
नैना मानों मृग के छौना
इक संग करलै ब्याह और गौना
ऐसे लूटन-हारे सौं फिर कछु बचवे कौ नाय।
अंखियाँ में अंखियाँ हैं करकीं
ताही दिन ते छतियाँ धरकीं
अंखियाँ ढूंढैं उन अंखियन को करती हाय हाय।।

------o------

मोहन सुजान दिन रैन रटैं राधे राधे।।

जागत मे राधे राधे, सोवत मे राधे राधे,
राधा बनी जीवन प्राण, रटैं राधे राधे।

बरसाने मे राधे राधे, गहवर मे राधे राधे,
नंदभवन नंदगाम, रटैं राधे राधे।
वृंदावन मे राधे राधे, गोवर्धन मे राधे राधे,
राधाकुंड रावल गोकुल गाम, रटैं राधे राधे।
पनघट पै राधे राधे, जमुना पै राधे राधे,
राधा रटन परी वाम, रटैं राधे राधे।
कुंजन मे राधे राधे, लतन मे राधे राधे,
सब ब्रज राधा ही भान, रटैं राधे राधे।
दिन हू मे राधे राधे, रात हू मे राधे राधे,
सब पल राधा ही मान, रटैं राधे राधे।
गावत मे राधे राधे, नाचत मे राधे राधे,
राधा कौ मुख गान, रटैं राधे राधे।
बंसी मे राधे राधे, राग अलापत राधे,
राधा ही बन गइ तान, रटैं राधे राधे।
माखन चोरत राधे, दधि लूटत मे राधे,
राधा ही ले जब दान, रटैं राधे राधे।।

------o------

मेरे घर कबहुं न आवै सांवरिया,
मोय काहे को तरसावै।।

वन वन गाय चरावत डोलै
तू तो कारी ओढ़ै कामरिया, मोय काहे..।
सोय गई और खोय गई मैं
मधुर बजाय दई बांसुरिया, मोय काहे..।
सुन-सुन मोपै रह्यो न जावै
चलगत में बाजै पायलिया, मोय काहे..।
होलै चलूं तो चल्यो न जावै
भाजूं तो जागै सासुरिया, मोय काहे..।
वंशी तो नागिन सी डस गई
फिरती डोलै बावरिया, मोय काहे..।
सुन-सुन हियरे हूक उठत है
डोलै पकरे पांसुरिया, मोय काहे..।
सुमिर-सुमिर ब्रज बाला गावैं
अंखियन ते बह गई आँसुरिया, मोय काहे..।।

------o------

मैंने तोही ते नेह लगायो रे
सुन प्यारे नन्द दुलारे।।

जग ते तोर सबन ते तोरी
नाते सब बिसरायो रे सुन प्यारे नन्द..।
तेरे खातिर जग ने ताने
दै दै गज़बहि ढायो रे सुन प्यारे नन्द..।
रात नींद ना आवै दिनहू
अंगुरिन गिनत बितायो रे सुन प्यारे नन्द..।
तेरेई द्वारे आय सांवरिया
अपनौं वास जमायौ रे सुन प्यारे नन्द..।
लोक और परलोक भूल गई
सबरौ भार में डार्‌यो रे सुन प्यारे नन्द..।
हंस के देख नेंक बेदरदी
जुलमी बहुत खिजायौ रे सुन प्यारे नन्द..।

------o------

गागरिया मेरी उचावैगौ, कन्हैया बंसी वारौ।

ऊँची सिढ़ियाँ घाट रिपटनो
ये दोनूं हाथ लगावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जमुना तीर छांह कदमन की
ये गैया आय चरावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जब देखै सिर दही मथनियां
ये दधि की लूट मचावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
छींके पै लौनी धर आई
ये चोरी करकै खावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
सांझ समय खिरका में मेरे
ये गैया आय दुहावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
मेरे घर के पिछवारे ते
ये हेलाहेल मचावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जमुना तीर रात आधी पै
ये बंसी मधुर बजावैगो कन्हैया बंसी वारौ।।

------o------

मेरो सांवरो सलोना न देखो सजनी।।

सांवरी सुरतिया मोहनी मुरतिया
लागै नजर न टोना, मेरो सांवरो..।
मुख में चमकत दूध की सी दतियां
तीखे नैनन के कोना, मेरो सांवरो..।
किलक किलक पलना में झूलै
खावै माखन कौ लौना, मेरो सांवरो..।
भागन ते पायो गरीबनी ने श्याम धन
जीवै जागै ये छोना, मेरो सांवरो..।।

------o------

नीलम का नगीना मेरा श्याम सलौना।

सोने की अंगूठी राधे चोरी कहूँ हो ना।
या मुंदरी को वो ही पहरे बड़ी रसीली होय,
मुंदरी पहरे सब जग भूलै, भूलै रोना धोना।
मुंदरी पहरी ब्रज की गोपीं छोड़ के दुनियां सारी,
प्रेम छकीं नाचैं मतवारी होनी होय सो होना।
ऐसी सुंदर जोरी प्यारी तीन लोक में नाहीं,
नजर न लागै काहू की ना लगै काहू को टोना।।

नीलम का नंगीना प्यारा श्याम सलोना।

ऐसौ प्रेम भर्‌यो ठाकुर कोई और नहीं है होना।।
गोकुल छठवें दिन ही हरि के पास पूतना आई,
जहर पिवाय राक्षसी नें हू जननी की गति पाई,
ऐसो दया भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना।
दूध दही माखन की चोरी घर-घर करी कन्हाई,
चोरी के मिस गोपिन की दरसन की आस पुराई,
ऐसो कृपा भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना।
वृन्दावन वंशीवट मोहन ने जब वंशी बजाई,
गोपी आईं रास रचायो नाचैं सबही नचाई,
ऐसो रंग भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना।।

------o------

श्याम बड़ौ जादूगर सिरमौर।।

ब्याही क्वारी कौई होवै, जादू मारै ठौर।
टोना कामन मूठ घात सब, चलै नैन की कोर।
मंतर जंतर बसीकरन(सब)याके बैनन बस रहे चोर।
बंसी मारन जंत्र भई, गोपिन को मारै जोर।
कौन बचैगी कौन बसै ब्रज, माखन चोर छिछोर।।

इक श्याम छैल ब्रज आवै री, गोरी बचती रहियो।।

बच जैयो गलियन जो पावै
वो पीछे पीछे आवे री, गोरी..।
ज़ो आगे आड़ो घेरै री
तू घूंघट नाहि उठैयो री, गोरी..।
जो घूंघट तेरो खोलै री
तू नैना नाहि मिलैयो री, गोरी..।
जो नैना तेरे मिल जावैं
तू नैकौ ना मुसकैयो री, गोरी..।
जो बरबस नैना मुसकावैं
तू हंस हंस मत लिपटैयो री, गोरी..।
जो हंस लिपटावै कहँ सखी फिर
घर कूँ मत बगदैयो री, गोरी..।।

------o------

ये कहा तो भयो,
श्याम राधा रानी को गुलाम भयो।।

जब ते देखी भानु लाड़िली,
बिक ही गयो, श्याम राधा रानी को..।

चंदा वदनी देख देख के,
चकोर भयो, श्याम राधा रानी को..।
प्यारी के मुख कमल पान को,
भ्रमर भयो, श्याम राधा रानी को..।
राधा अंग सुगंध लेन कौ,
हरिण भयो, श्याम राधा रानी को..।
राधा राधा रटतो डोलै,
पपीहा भयो, श्याम राधा रानी को..।
राधा की पायल सुन नाचै,
मोर भयो, श्याम राधा रानी को..।।

------o------

सांवरिया की प्यारी-प्यारी तिरछी नजरिया,
मर मर जाये गुजरिया।।

तिरछे नैना तिरछै सैना तिरछी रेख कजरिया।
जादू टोना मूठ चलावै, मंतर मार नजरिया।
वशीकरन मानो है सजनी, अपने वश में करिया।
चाहे जैसो नाच नचावै, कीनी काठ पुतरिया।
कुल के घर के बैरी लागैं, लोक लाज सब जरिया।
कृष्ण नाम की टेर लगी है, नैनन सों जल झरिया।।

मैया ने दियो लड्डू फूट गयो,
कन्हैया प्यारो मैया ते रूठ गयो।।

भोरइ सोइ उठ्यो नंदलाला
माखन मांग रह्यो गोपाला
पकर्‌यो आंचर मैया को छूट गयो, कन्हैया..।
आंचर छोड़ दह्यो मथ दूंगी
सद लौनी निकसत ही दउंगी
रोवै श्याम आंसू घूंट गयो, कन्हैया प्यारो..।
दही चलाऊं जो लौं छंगना
लड़ुवा लै लै खैयो मगना
कान्हा को मुख खूट गयो, कन्हैया प्यारो..।
लड़ुवा दियो बड़ौ मोटो सो
पकरो गयो न श्याम सुन्दर सों
लड़ुवा गिर कै टूट गयो, कन्हैया प्यारो..।
कान्हा रोवत पांवन पटकै
काजर मीड़ै हाथन झटकै
मैया को मन टूट गयो, कन्हैया प्यारो..।।

परबस है के ठाढ़ी, मोह लइ मोहन ने।।

जाय रही कुंजन वन इकली
पचरंग चूनर गाढ़ी, खैंच लइ मोहन ने।
बच के निकसी लाजन इकली
लंबो घूंघट मारे, खोल दइ मोहन ने।
जैसे तैसे चली पीठ दै
अपने मुख को फेरे, पकर लई मोहन ने।
रस की बतियां कहन लग्यो वह
भाजी जा बजमारे झपट लइ मोहन ने।
सोवत जागत नागर देखूँ
टोना कैसो मोपै कर दियो मोहन ने।।

------o------

तेरी नजर है या टोना, ये जादू टोना,
नजरिया मत मारै रे।।

जा दिन लागी नैन कटारी
हिरनी सी तैने घायल मारी
दै गयो रोना धोना, ये जादू टोना..।
सुनो जी सुनो तुम नंद के छैया

कृष्ण कन्हैया माखन चुरैया
चित को अब चोरो ना, ये जादू टोना..।
लटुरी लटकै कारी कारी
गालन पै छाईं घुंघरारी
कैसो रूप सलोना, ये जादू टोना..।
एक बार तू हंस मुसका दे
तिरछे नैना बान चला दे
तिरछे नैना कोना, ये जादू टोना..।
बंसी बजैयो कुंवर कन्हाई
दौरी दौरी सुनवे आई
सुध बुध सब ही खोना, ये जादू टोना..।।

------o------

चोर चोर, माखन चोर, चीर चोर, चित चोर।।

रात विरात घरन में आवै
माखन के मिस धूम मचावै
चोर चोर मटकी फोर चीर चोर चित चोर।
सब सखियाँ मिल यमुना जावैं
चीर खोल गोता लै न्हावैं

चोर चोर बरजोर चीर चोर चित चोर।
अँखियन में ये हंसै हँसावै
अँखियन में ही मान मनावै
चोर चोर रस चोर चीर चोर चित चोर।।

------o------

ये आया माखन चोर ब्रज की गलियन।

यशुदा को छैया कुंवर कन्हैया
ये नंद किशोर, ब्रज की गलियन।
रंग रंगीले ग्वाल बाल संग
ये कर रहे शोर, ब्रज की गलियन।
नाचैं गावै सैन चलावैं
ये मटक मरोर, ब्रज की गलियन।
मुरली महुवर ढोलक बाजै
धुनी घनघोर, ब्रज की गलियन।
ऐसी को जो बचके आवै
लुटैगी बरजोर, ब्रज की गलियन।
दूध दही और माखन लैवै
नैनन की कोर, ब्रज की गलियन।।

राधावर कुञ्जविहारी रे राधे गोविंद बोलो।।

नंद बाबा और यशुदा मैया
भैया बल हलधारी रे राधे गोविंद बोलो।
दूध पियत पूतना पछारी
अघ बक धेनुक मारी रे राधे गोविंद बोलो।
बड़े बड़े असुरन संहार्‌यो
नाश्यो सौ फणधारी रे राधे गोविंद बोलो।
सात दिना तक गिरिवर धार्‌यो
नाम पर्‌यो गिरिधारी रे राधे गोविंद बोलो।
वृन्दावन में रास रचायो
राधा रास विहारी रे राधे गोविंद बोलो।
बरसाने ते भई सगाई
जोरी भानदुलारी रे राधे गोविंद बोलो।।

------o------

जुलम करैं ये घूंघट मार मेरी भोरी मैया।।

यशुदा मैया मेरी बड़ी भोरी
वाको मैं भोरो खिलार मेरी भोरी मैया।
भोरी मैया को भोरोइ बेटा
ये छरछंदी नार मेरी भोरी मैया।
हेला दैकें मोय बुलावैं
नेक कढ़ाय जा धार मेरी भोरी मैया।
तो बिन दूध न देय हमारी
गैया कूं ऐसी परी ढ़ार मेरी भोरी मैया।
जब जाऊं मैया चोरी लगावैं
सांच धरम दई डार मेरी भोरी मैया।
चोर-चोर कह नाम बिगार्‌यो
मैया जाऊं मैं ब्रज पार मेरी भोरी मैया।
सुनत यशोदा रानी कंठ लगायौ
ग्वालिन दीनी टार मेरी भोरी मैया।।

------o------

मन में बस्यो री कन्हैया प्यारो
वह मोर मुकुट वंशीवारो।।

मै तो भूली दुनियाँ सारी
मोकूँ लोग कहैं मतवारी
मोहै लगै घरबार सबै खारो, वह मोर..।
मैंनें ओढ़ी श्याम चुनरिया
सब की लग गई नजरिया
मोपै रंग चढ्यो है कारो, वह मोर..।
मैनें कुल की कान मिटाई
सब छोड़ी मान बड़ाई
सब मैने भार में डार्यो, वह मोर..।
मोहन की अँखियां प्यारी
देखत ही तन मन हारी
मोहे जारो चाहे मारो, वह मोर..।।

------o------

गुजरिया झूठी है सुन मेरी मैया।।

मैं तो गाय चरायवे जाऊं
मोकूं बुलावै है, गुजरिया झूठी है..।
मैं भोरो जब घर कूं जाऊं
मोकूं नचावै है, गुजरिया झूठी है..।
कबहूँ वंशी ये बजवावै
कबहूँ गवावै है, गुजरिया झूठी है..।
कबहूँ संग संग ठुमका देवै
नैन चलावै है, गुजरिया झूठी है..।
कबहूँ मोते कारो बोलै
हंसै हंसावै है, गुजरिया झूठी है..।
ऊपर ते ये आग लगावै
जाल बनावै है, गुजरिया झूठी है..।
क्यों तू याको नांय भगावै
मोय खिसयावै है, गुजरिया झूठी है..।।

------o------

आज मिल गई गली संकरिया में, गोरी घूंघट वारी।
कैसे घेरी गली संकरिया में, ओ मोहन दान विहारी।।
सिर पै मटकी दूध दही की
तू जानै है मेरे जिय की
मेरो मनुआं फंस्यो गगरिया में, गोरी घूंघट..।
दूध दही नायं सेंत-मेंत को
मांगै जैसे याही के बाप को
ना बसूं मै तेरी नगरिया में, ओ मोहन..।
इतरावै तू नार नवेली
ऐसे खिल रही जैसे चमेली
कैसे जच रही आज घघरिया में, गोरी घूंघट..।
कारो भंवरा संग संग डोलै
बिना बात के मोते बोलै
तू डोलै गली बजरिया में, ओ मोहन..।
बातन देर करै काहे कूँ
दान देय ना नेकउ मोकूं
आज फंस गई जाल मछरिया में, ओ गोरी..।
ना दऊं ना दऊं ऐसे ना दऊं

नाच गाय तो तेरी सुन लऊं
देख माखन धर्‌यो मथनियां में, ओ मोहन..।
नांच देख लै मेरो प्यारी
आ संग नाचैं जोवन वारी
तू मारै बान नजरिया में, ओ गोरी..।।

------o------

अरी डरपावै आयो हाऊ मां बड़ो बुरो बलदाऊ।।
लै जावै हमकूं खेलन कूं, जहां सघन वन छांह घनी,
ग्वालबाल सब सखा जोर कें, खेल खिलावैं बहुत जनी,
कूदा-कूदी आँख-मिचौनी, राजा चोर सिपाऊ, माँ..।
मोते कहै तोय नंदबाबा, मोल लियो है कौड़ी में,
सखा संग के देंय गवाही, हमने सुनी बजरिया में,
याही ते ये रुँगंट खेलै, हंस हंस सबै चिराऊ, माँ..।
नंद यशोदा गोरे-गोरे, ये कारो कहां ते आयो,
याको ब्याह न होवै मैया, तिलकन्ना रच मन भायो,
बन्यो-ठन्यो डोलै छैला सों, क्वारो ही रह जाऊं, माँ..।
सखा साथ लै चढ़ै ऊख पै, मो पै चढ़्यो न जावै है,
ऊपर ते ये किल्ली ठोकैं, हाऊ काटन आयो है,

बड़े दांत हैं हाऊ के औ मुंहड़ो जैसे बिलाऊ, माँ..।
मैया मैं जब भागन लाग्यो ,मोते पहले भज आये,
छोड़ अकेले मोकूं बन में, ऐसेइ सब कूं सिखराये,
भाजत-भाजत हार गयो तन, कांपै पांय पिराऊं, माँ..।
रिसयायी रोहिणी दाऊ पै, श्याम बड़ो मुसकावै है,
बोले दाऊ ये है झूठो, दावं दिये बिन भागै है,
दोनों मैया हंस दोनों को, गोद लै लाड़ लड़ाऊं, मां..।।

------o------

यारी मोहन ते लगाय लै, ऐसो यार और कोउ नांय।।

या जग के सब यार एक दिन, साथ छोड़ भगजांय,
याकी यारी सच्ची यारी, जनम जनम निभ जाय।
जग के झूठे यार सबै, मतलब ते गांठ जुराय,
काम बने पै फिर नांय देखैं, नैना लेय फिराय।
लै लै रंग श्याम रसिया कौ, अमृत बहतो जाय,
मलमूतन को कहा भोगवो, माखी देख घिनाय।
ये संसार फूंस को छप्पर, आग लगै जर जाय,
चल री सखी श्याम रसिया घर, जहाँ अमर है जाय।।

गोपिन पाछै डोलै, कान्हा रुप बावरो।।

काहू की चोटी को पकरै
काहू को घूंघट खोलै, कान्हा रूप..।
काहू के अंचरा को खेंचै
हंस हंस मीठो बोलै, कान्हा रूप..।
काहू की छतियन को छूवै
नैनन में रस घोलै, कान्हा रूप..।
तिरछे सैनन कहै काहु ते
चल री करैं किलोलै, कान्हा रूप..।
राधा चरन कमल को भौंरा
प्रेम बिक्यो बिन मोलै, कान्हा रूप..।।

------o------

टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी नजरिया तेरी।।

टेढ़ो मुकुट शीश पै वाको
टेढ़ो टोढ़ो श्याम टेढ़ी पगिया तेरी।
टेढ़ोई कुण्डल टेढ़ी माला
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी लकुटी तेरी।

टेढ़ो ठाड़ो ललित त्रिभंगी
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी चलगत तेरी।
टेढ़े तेरे हैं सब ग्वाला
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी चोरी तेरी।
टेढ़ी गोपी टेढ़ी गारी
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी जारी तेरी।
टेढ़ी रस लीला कुञ्जन की
ब्रह्मादिक मोहें सुन तेरी।।

------o------

तेरे नैना कर रहे टोना श्याम सलोना।।

जब ते देखे तेरे नैना, है गयो कछु अनहोना।
तब ते भूल गई सब कछु मैं, नाय भावै घर भोना।
मेरी तेरी बात चली है, सबइ लगावैं लोना।
छूटी लोक लाज सब कुल की, और कहा अब होना।
खान पान हू भूल गई मैं, भूली सेज पै सोना।
रात रात भर बैठी जागूं, कर रही रोना धोना।।

------o------

तेरे गुलचा गाल जमाय दूंगो, क्यों चोर कहै तू मोते।।

कबहू माखन चोर बतावै
कबहू इंडुरी चोर बतावै
कबहू मटकी फोर बतावै
कबहू सारी लहंगा फरिया चीर चोर कहै मोते।
कबहू नन्द भवन में जावै
मैया ते कछु जाय लगावै
कबहू मैया ते पिटवावै
सांटी लैंके आँख दिखावै औ किल्लावै मोते।
कबहू कहै चुनरिया फारी
अंचरा खैंचै है बनवारी
मैया तेरो श्याम खिलारी
खट्टी मीठी बात बनावै मुंह बिचकावै मोते।
कबहू कहै कलूटा कारे
गारी देवै नाम निकारै
कबहू चिढ़ावै गूठा मारै
ऐसे ही रह जायगो बोले क्वारो बरुआ मोते।।

ब्रज में कैसे रहूँ, बताय भोरी मैया।।

गाय दुहावैं धार कढ़ावैं, ऊपर ते ये चोर बतावैं,
इनते कैसे बचूं, बताय भोरी मैया।
मैं भोरो ये मोय बुलावैं, दधि में ते चेंटीं बिनवावैं,
अब मैं कैसे करुं, बताय भोरी मैया।
पनघट पै गगरी उचवावैं, मटकी फोरन को लोना लगावैं,
कैसे ये सब सहूँ, बताय भोरी मैया।
माता पिता गोरे तुम कारे, यों कह गारी देंय उघारे,
कैसे ये सब सुनूं, बताय भोरी मैया।।

------o------

वंशी के बजैया रे, श्याम तेरो रंग कारो।।

तैनें कारी अंधेरी में जनम लियो
तू याही विधि कारो रे, श्याम तेरो रंग कारो।
तैंने कारी गैयन को दूध पियो, तू याही..।
तैंने कारे नाग को नाथ दियो, तू याही..।
तू दधि माखन मन को चौरे, तू याही..।
तू बस रह्यो सब की आँखन में, तू याही..।।

कौंन दुहावै गैया कन्हैया छलबलिया।।

आधौ दूध दुहै दोहनी में
आधौ लै गटकैया, कन्हैया छलबलिया।
छिन दोहत छिन धार भिजावत
छिन पकरै अचरैया, कन्हैया छलबलिया।
छिनही हँसै तिरछो मुसकावै
यहै सिखाई तेरी मैया, कन्हैया छलबलिया।
कारो ओढ़ै कारी कामर
बिदक जाय मेरी गैया, कन्हैया छलबलिया।
रसिया गावै सैन चलावै
ठुमका दै नचकैया, कन्हैया छलबलिया।।

------o------

राधा गोरी मोहन कारो, सगाई नाय होय प्रोतानी।।

कीरत कहै सुन पूरनमासी
राधा गोरी है चन्दा सी
कारो गिरिधर श्याम घटा सी
कारो दूलह गोरी दूल्हन है यह बात लजानी।

सुन कीरत प्रोतानी बोली
तेरी बतियां भोली भोली
जोरी दोनों की अनमोली
गोरो मुख लटकारी पुतरी कारी आँख सुहानी।
अघ बक बकी शकट संहारे
कालीदह में नाश्यो कारे
सात दिना तक गिरिवर धारे
राधा को मन चाह्यो गिरिधर सुन कीरत मुसकानी।
गोपी आपइ श्याम बुलावैं
माखन अपने हाथ खवावैं
चोरी को ये नाम लगावैं
देन उरहनो जावैं देखन श्याम रुप दीवानी।
ब्रज में श्याम मोहनी छाई
सब कूं मोह लियो है कन्हाई
गोपी माखन दूध मलाई
चोरी औ दधि दान की लीला, ये सब प्रेम कहानी।।

------o------

रस भीनों सांवरिया राधे को रंग रसिया।।
यमुना तट पै न्हावन बैठी श्री वृषभानु दुलारी,
बैठ कदम पै निरखन लाग्यो मोहन श्री गिरिधारी,
भयो रूप को बावरिया, राधे को रंग रसिया।
कुंजन ह्वै के जाय रही जब श्री राधा सुकुमारी,
आगे आगे मारग झारत, प्यारो श्री बनवारी,
बिछावै फूलन डागरिया, राधे को रंग रसिया।
ऐसी वंशी श्याम बजावै रीझै राधा प्यारी,
वन कुंजन में सुनवे आवै लाज भार में डारी,
छेड़ै तानन बाँसुरिया, राधे को रंग रसिया।
कबहू ब्यार करै पीताम्बर वारै लेय बलैयां,
चरन पलोटै प्यारी के निज कर ते कुंवर कन्हैया,
फूलन की सेजरिया, राधे को रंग रसिया।।

------o------

ये तो माटी में लोट-पोट होय,
यशोदा मैया तेरो ललना।।
रच पच कें सिंगार बनायो
ये तो रेती में जावै सोय, यशोदा मैया..।

पूंछ पकर बछरन की खिचरै
पूछौ खिरक में कोय, यशोदा मैया..।
रोके ते न रुकै यशोदा
बरजे ते देवै रोय, यशोदा मैया..।
आँख मींड़ काजर फैलायो
तिलकहु दीयो खोय, यशोदा मैया..।
चोरी हू अब करन लग्यो है
नाम दियो तेरो धोय, यशोदा मैया..।
सूने घर में अचकै आवै
कहा सुनाऊँ तोय, यशोदा मैया..।।

------o------

देखो नाचै कन्हैया देखो नाचै
छूंम छं छं छं छं छन नन नन।।

काली के फन-फन पै नाचै
फं फं फं फं फं फन नन नन।
लाल अधर पै मुरली बाजै
मं मं मं मं मं मन नन नन।
हाथन में मणि कंकण बाजैं
कं कं कं कं कं कन नन नन।

पतरी कमर में किंकिणी बाजैं
किं किं किं किं किं कन नन नन।
चरण कमल में घुंघरू बाजैं
घं घं घं घं घं घन नन नन।
नभ में शिव को डमरु बाजै
डं डं डं डं डं डन नन नन।
ऊपर देव मृदंग बजावैं
धे धे धे धे धेन नन नन नन।
झांझ झील हू की धुन बाजै
झं झं झं झं झन नन नन नन।।

------o------

पूतना जो तारन हारो, ऐसो और कौन दया वारौ।।

बाल घातनी चली पूतना, गोकुल सुंदर रूप धरे,
लै लियो गोद श्याम छह दिन कौ, नील कमल रसगंध भरे,
कालकूट विष लग्यो स्तनन में लाला के मुख डार्‌यो।
पीयो दूध प्राण के संग हरि, और न मारे शिशु ब्रज में,
हत्यारिन को मात बनाई, भोरो श्याम दयालन में,
इन्हे छोड़ कहं जाये शरण जो ऐसो ब्रज रखवारौ।।

नखरारो सांवरिया सबन पै जादू डार्‌यो।।

यमुना न्हावत चीर चुरावै, बैठै जाय कदम पै,
चीर लैन को नगन बुलावै, बाहर यमुना तट पै,
गोपी बनी है पूतरिया, सबन पै जादू डार्‌यो।
दूध दही को दान लेय, मारग रोके गिरिधारी,
खाय खबावै सबै लुटावै, फोरै मटकी भारी,
ऐसो नटखट नागरिया, सबन पै जादू डार्‌यो।
चोर-चोर के माखन खावै, घर भीतर घुस जावै,
बछरा खोलै धूम मचावै, भागै फिर छिप जावै,
देखै तिरछी नाजरिया, सबन पै जादू डार्‌यो।
वंशी ते जूड़ो खेंचै औ अपने पास बुलावै,
चोली छुवै हंसै नैनन में, नैना नैन मिलावै,
रोकै इकली डागरिया, सबन पै जादू डार्‌यो।
पनघट पै इंडुरी लैकें नहिं देवै बहुत खिजावै,
गगरी भर उंचवावै औ पानन की पीक लगावै,
पौंछे मेरी आंचरिया, सबन पै जादू डार्‌यो।।

------o------

ब्याह कराय दै री, कहै कन्हैया मेरी मैया।।

ब्रज की गोपी मोय चिढ़ावैं
कारौ कारौ कह चहकावैं
इन्हें समझाय दै री, कहै कन्हैया..।
मोतै कहै तू क्वारो रहैगो
कोई न अपनी बेटी देगो
गोरी लाय दै री, कहै कन्हैया..।
चोर चोर ये नाम निकारैं
ये सब मेरो ब्याह बिगारैं
दुल्हन मंगाय दै री, कहै कन्हैया..।
मोते बहू की बात चलावैं
हेल उचवाय के सींग दिखवैं
फेरा पार दै री, कहै कन्हैया..।।

------o------

कोई माखन चोर री ब्रज गलियन डोलै।।

जो कोइ गैल में मिलै अकेली
बरजोरी गलबैंया मेली

चलै न कोई जोर री, ब्रज गलियन..।
लैके टोली ग्वाल बाल की
चोरी करै दही माखन की
घर घर मच रह्यो शोर री, ब्रज गलियन..।
संग संग बंदर डोलैं वाके
मटका फोरैं दूध दही के
छींके डारैं तोर री, ब्रज गलियन..।
सांझ सवेरे वंशी बाजै
आधी रात को गोपी भाजैं
घर लौटें बड़े भोर री, ब्रज गलियन..।
ब्रज को चंदा है मनमोहन
रस बरसावत डोलै गलियन
गोपी बनी चकोर री ब्रज गलियन..।
जल भरवे कूं गोरी जावैं
पनघट पै पीछै ते आवैं
खैंचै अचरा छोर री, ब्रज गलियन..।।

------o------

कैसी चतुर सयानी गूजरिया।।

मैं भोरो मेरी मैया भोरी
तू छलछंदिन है ठगवारी
कैसी मैयाय सिखाय गई गूजरिया।
मैंनें ना देख्यो याको घर
घुसे होंयेगे घर में बंदर
कैसे लौना लगाय गई गूजरिया।
मैया ये है चोट्टी भारी
खाय-जाय मटकी पूरी सारी
मोते कह गई याकी सासरिया।
याके घर कौ सजन मोधुआ
इत उत डोलै खाती पूवा
कैसी आँख दिखाय गई गूजरिया।।

------o------

नैना गिरिधर ते मिलाय लै, भारी सुख पावैगी गोरी।।

इत उत काहे डोलै सब मतलब के तू है भोरी,
लै जोबन क़ो रस उड़ जावैं, फिर होय माथा फोरी।

गोरौ छूटै कारौ छूटै छूटै सब की जोरी,
बिछरौ मीत मिलै नाय जग में, जाय प्रीति सब तोरी।
फल फूलन की डारी ये शोभा है दिन की थोरी,
जोबन नदिया बह जावै ज्यों धन है जावै चोरी।
अमर सुहागिन है जावैगी चूनर रस में बोरी,
लाल लाडली मिलैं खेलते गहवर सांकरी खोरी।।

------o------

ढीठ हठीलो अलबेलो कैसौ जायो यशोदा ने लाल,
रानी यशुमति भोरी सजनी(येतो)छलिया छलके जाल।
रानी यशुमति कैसी गोरी, तन मन कारो गुपाल,
यशुदा भोरी है सकुचीली, लंगर गाय को ग्वाल।
घर कौ याय माखन नाय भावै चोरी कौ खाय निहाल,
गूजरी की मटकी नित फोरै, छेड़ै करै कुचाल।
बोली बोलै सैन चलावै और बजावै गाल,
रसिया गावै मुंह मटकावै, नांचै दै दै ताल।
अंचरा खेंचै पायन छीवै तोरै मोती लाल,
ऐसी नदिया बही प्रेम की, रात दिना सब काल।।

वा दिन भाज गई, गोरी रस की भरी गुजरिया।।
मोते बोली तोर ला पतौआ
दही पिवाऊं तोय कन्हैया
धोखो दै कें गई, गोरी छल की भरी..।
काउ दिन हाथ परैगी मेरे
वा दिन देखूं नखरे तेरे
नखरे दिखाय गई, गोरी छल की भरी..।
तेरे बाखर में मैं आऊं
बछरा खोल दूध चोखाऊं
सींग दिखाय गई, गोरी छल की भरी..।
पनघट पै गागर लुढ़काऊं
इंडुरी लै यमुना में बहाऊं
जुलम गुजार गई, गोरी छल की भरी..।
मारग में लूटूं दधि माखन
मटकी फोर खवाऊं बंदरन
बच के निकर गई, गोरी छल की भरी..।
मोते अटकी है तू गोरी
तेरे घर में करूं मैं चोरी
फेंटी पर जो गई, गोरी छल की भरी..।।

इतनी मती उड़ै तू नार, चिरैया उड़ कहं जावैगी।।

हौलै हौलै तू कित जावै
अचकै अचक सरकती जावै
बातन में मोकूं बहकावै
दान दिये बिन कैसे मोते बचकें जावैगी।
मत पकरै मोहन मेरी बैंया
मोकूं है रही देर कन्हैया
देख दूर गई तेरी गैंया
खैंचा खैंची मतकर ये मटकी गिर जावैगी।
ठाड़ो श्याम तू नैन मिला दै
अपने हाथन दही पिवाय दै
घूंघट खोल तनक मुसकाय दै
इतनी सूम बनें ये बिरियां फिर नाय पावैगी।
मोहन तेरो कहा बिगरैगो
घर को सजन कछु बहम करैगो
मेरो देस निकारो होयगो
सास ननद छरछंदी कह कह मोय पिटवावैंगी।

गली सांकरी मोहन घेरी
रुप माधुरी ऐसी फेरी
ग्वालिन बंस में है गई चेरी
नैन मिले मुसकाय श्याम के गर लग जावैगी।।

------o------

धीरे चलो पीछे ते श्याम रह्यो आय।।

गोरे-गोरे माथे पै टीको चमकै,
धीरे चलो टीको सरक नाय जाय।
बड़ी-बड़ी अंखियन काजर सोहै,
धीरे चलो रेख बिगर नाय जाय।
मोतिन हार गरे में सोहै,
धीरे चलो अंगिया दरक नाय जाय।
घूम घुमारो लहंगा सोहै,
धीरे चलो घूम बिगर नाय जाय।
रसिया ते बचती रहियो री,
धीरे चलो आय लिपट नाय जाय।
कानन झुमके बड़े सलौने,
धीरे चलो नथली ररक नाय जाय।।

ऐसी कौंन न मोहै श्याम देखे।।

बड़े बड़े नैना पैनी कटारी,
ऐसी कौन कटै न श्याम देखे।
कजरा कोर कटीली बरछी,
ऐसी कौन चुभै न श्याम देखे।
भौहें बनी धनुष सी टेढी,
ऐसी कौन मरै न श्याम देखे।
चितवन में मधुरे मुसकावै,
ऐसी कौन हंसै न श्याम देखे।
मस्तानी सी चाल झूमती,
ऐसी कौन चलै न श्याम देखे।
पीरौ पटुका उड़ फहरावै,
ऐसी कौन उड़ै न श्याम देखे।।

------o------

अरी दधि बेचनहारी, ऐयो अकेले में।

अरे नांय आऊं सांवरिया, मैं तो अकेले में।।
गोरी गोरी सोने की सी लगै पूतरी प्यारी,
पतरी कमर बड़ी लचकावै चाल चलै मतवारी,

अरी दधि बेचनहारी..।
कारौ-कारौ भंवरा को सौ, सौ-सौ फेरा देवै,
तेरे संग कारी ना होऊं काहै बलैंया लेवै,
अरे नाय आऊं सावरिया..।
प्रेम पेंठ ब्रज में लागी है क्यों भाजै तू प्यारी,
हम दोनों की प्रीति जुरी है, मत बन भोरी भारी,
अरी दधि बेचनहारी..।
प्रीति न जानें कारो भंवरां, उड़-उड़ के रस लेय,
गायन को ग्वारिया श्याम क्यो प्रेम दुहाई देय,
अरे नाय आऊं सांवरिया..।
सबरो जग है प्रेम रंगीलो, तू क्यों बच रही गोरी,
मत चूकै मैं तेरो प्यारो देखै चोरी-चोरी,
अरी दधि बेचनहारी..।
बंशी तनक बजा दै मोहन कुंजन यमुना तीर,
बंशी सुन गलबैंया लागी, रह्यो न मन में धीर,
अरे नाय आऊं सांवरिया..।।

------o------

यशुदा दह्यो बिलोवै, कन्हैया बारो अंगना में खेलै।।

महलों में खेलै अंगना में खेलै,
घुटमन घुटमन डोलै, कन्हैया बारो..।
कबहू ठाड़ो है कैं किलकै,
ओंगो मोंगो बोलै, कन्हैया बारो..।
पैजनियां बाजै छुम छननन,
पायन पटकत डोलै, कन्हैया बारो..।
पीरी झंगुलिया कमर घंटिका,
घूमैं हौलै हौलै, कन्हैया बारो..।
कबहूं गिरै देहरी लांघत,
रोवत अंसुवा ढोलै, कन्हैया बारो..।
मैया गोदी लै पुचकारै,
फिरते करत किलोलै, कन्हैया बारो..।।

------o------

छोटो सो मेरो छोना ये ब्रज को खिलौना,
ये कौंन ने रुलायो श्याम रोवत घर आयो।।
अब ही मैंने सिंगार्‌यो रे

पीरी झंगुली धरायो रे
काजर को दियो डिठोना, ये ब्रज को..।
सबरी ब्रज की बैर परी
माखन चोर बनावें सगरी
चोरी कौ दै दियो लोना, ये ब्रज को..।
दिन रात चरावै गैया है
संझा को घर बगदैया है
कैसे खायो दधि दोना, ये ब्रज को..।
आँख मीड़ कजरा फैलायो
हिलकिन ते रोयो बिललायो.
ये कौन दै गई रोना, ये बिरज को..।
ज्वानी की सब मस्तानी हैं
दोष छिनारे को लगावैं हैं
बालक है नंद डिठौना, ये ब्रज को..।
यो आगे पीछे डोलैं हैं
मोहन को आप बुलावैं हैं
कर देवैं जादू टोना, यो ब्रज को..।।

ग्वालिन कैसी झूंठी बात बनाय रही।।

माखन की तो कहा कही, मैंने छाछऊ नाय चखी,
याय नेंक सरम ना आवै झूंठी बात कही।
माखन चोर और दधिदानी, मटकी फोर नाम मनमानी,
रोजइ नाम बिगारत डोलैं जहीं तहीं।
मैया ये सब चोट्टीं भारी, चोर लई मेरी बंशी प्यारी,
इननें जुलम गुजार्‌यो नहीं जाय सही।
आपै मोकूं झालो देवैं, अपने घर में मोय बुलावैं,
आपइ मेरे सामइ धरदैं मटकी दही।
भोरइ तू मोय माखन देवै, भर-भर थारी दही पिवावै,
झिके पेट ना खावै कोई काहे मान रही।।

------o------

झूठी बड़ी ये लुगैया, सुन लै मेरी मैया।।

दूध दही मुक्तेरो घर में
माखनं घैया भरे माट में
नौ लख बंध रहीं गैंया, सुन लै मेरी मैया।

अपने हाथन मोय जिमावै
भर-भर कें थारी तू प्यावै
भूखो न तेरो कन्हैया, सुन लै मेरी मैया।
भोरे ही गैयन पै मैं जाऊं
गाय चराय सांझ को आऊं
कब मैं गयो याकी ठैंया, सुन लै मेरी मैया।
ये घर फोरी घर-घर डोलै
मीठी बातन में विष घोलै
इनते बचावै रमैया, सुन लै मेरी मैया।
घर बैठे को चोर बतावै
बाहर दान को लौना लगावै
ऐसी लगै ज्यों ततैया, सुन लै मेरी मैया।
डंक मार कें फिर उड़ जावै
ऊखल में बंधवा पिटवावै
पूछ लै तू बलमैया, सुन लै मेरी मैया।।

------o------

ला रे नाव अरे मल्लहा के, उतार पार यमुना के।
हम तोहे पुकारें रह-रह के, किनारे ठाड़ी यमुना के।।
लै रहीं यमुना अधिक हिलोरें
चढ़ रहीं ऊपर देय झकोरे
उड़ै चूनरी ये झोंके ब्यार के, उतार पार..।
आओ बैठो ब्रज की नारी
उतराई कहा देंगी सारी
मैं पहले लऊं ठहराय के, उतार पार..।
पहले पार उतार नवरिया
देंगी नाव लगाय किनरिया
जाय बैठी हैं ऊपर नाव के, उतार पार..।
यमुना बीच पहुँच गई नैया
गाय उठ्यो कछु गीत नवरिया
अरि ये तो है ढोटा नंद के, उतार पार..।
सबरी हंसी हंसी हैं प्यारी
आय मिले प्यारे गिरिधारी
कैसे कैसे हैं छंद नंदलाल के, उतार पार..।।

तैंने छोड़े कहाँ मोर मुकुट धारे ओ कृष्ण बंसुरिया वारे।।
मोर मुकुट तज औढ़ी चूनरी
हाथन में क्यों पहरी चूरी
गोपी रूप धरे न्यारे, धरे न्यारे ओ कृष्ण..।
पीताम्बर तज चोली पहरी
कटि काछनी तज पहरी सारी
छतियन पै मोतिन हारे, मोतिन हारे ओ कृष्ण..।
कड़े छड़े बाजूबंद सुन्दर
हाथन मेंहदी पांव महावर
बिछुवा मुंदरी कर धारे, मुंदरी कर धारे ओ कृष्ण..।
ललिता पूछ रही गिरिधर सों
सखी सांवरी बोली छवि सों
राधा दरस आस धारे, आस धारे ओ कृष्ण..।
ललिता लै गई महल सांवरी
लम्बो घूंघट लंहगा वारी
ये आई चरन लगै त्यारे, लगै त्यारे ओ कृष्ण..।
प्यारी मिलवे लगीं गरे ते
समझीं धोखो भयो है मोते
हंस फूलन लै-लै मारे, लै-लै मारे ओ कृष्ण..।।

मालिन बरसाने में आई।।

लेओ रंग बिरंगे फूलन, हार बहुत से लाई।
ललित ने टेरी वह मालिन, महलन में वह आई।
कौंन गाँव ते आई मालिन, कौंन कौंन की जाई।
नेही नाम पिता को जानों, प्रीती मेरी माई।
प्रेम नगरिया गाँव हमारो, जहां जनम है पाई।
कैसे आई तू बरसाने, दूर देस क्यों आई।
सब कोऊ जानैं भानुलाड़िली, जस सुनकें मैं आई।
पायन लगी लीड़िली के तब, बोली कीरति जाई।
ऐसी रूपवती तू सजनी, सुनत ही गई लजाई।
लै पहरा फूलन के हरवा, सुनत सांवरी धाई।
पहरावन लागी लै हरवा, नैनन में मुसकाई।
जान गई प्यारी ये छलिया, हंसन लगी मन भाई।
सबनें जान लिए ये प्यारे, नंदलाल सुख दाई।
राधा माधव मिले कुंज में, लीला रसिकन गाई।।

लग जायेगी नजर (तोहे) घनश्याम, मत चलै झूमतो इतरातौ।।

जो कहुँ देखेंगी ब्रज गोपी,
बिक जामेंगी बिन दाम, मत चलै..।
जुलम करै तेरी ये चितवन,
जाने मोल लियौ सब गाम, मत चलै..।
जुलम करै तेरी ये मुसकन,
जाने कर दियो काम तमाम, मत चलै..।
जुलम करै तेरी ये मुरली,
जाने मोह्यो सब ब्रजधाम, मत चलै..।
जुलम करै तेरी माखन चोरी,
जाते चोर भयो तेरो नाम, मत चलै..।
जुलम करै तेरी छेड़ा-छेड़ी,
जाते बहुत भयो बदनाम, मत चलै..।।

------o------

राधारानी को कन्हैया बड़ो प्यारो,
मन मोहन मुरली वारो।।

घर-घर माखन जाय चुरावै
माखन खाय दही फैलावै
माखनचोरी हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन..।
पनघट पै जल भरन न देवै
गगरी भरी शीश लुढ़कावै
गगरी फोरै पै हू लागै बड़ो प्यारो, मन..।
गली सांकरी घेरै नित ही
दधि को दान लेय बरबस ही
लूटै मटकी हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन..।
कुंज गली में जो मिल जावै
बैंया पकर के रार मचावै
रार करत हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन..।।

------o------

तेरे नैना बान कमान छैल सुन नंदगैयां।।

टेढ़ी भौंह मरोरा मारै
करै घायल ये मुसकान, छैल सुन नंदगैयां।
मोर पंख सिर पै लहरावै
कैसी अलबेली शान, छैल सुन नंदगैयां।
लटुरी लटकैं गोल कपोलन
तेरे झलकैं कुंडल कान, छैल सुन नंदगैयां।
नैनन की कोरन सौं तिरछे
देखे मारै बान, छैल सुन नंदगैयां।
झूम चलै मुड़-मुड़ के देखै
पीताम्बर फहरान, छैल सुन नंदगैयां।
बंसी तो ठगनी सी है गइ
मोहे मीठे तान, छैल सुन नंदगैयां।।

------o------

अरे मत निकसै गोकुलचंदा,
लग जायेगी नजर नंदनंदा।।

बाहर है मदमाती गुजरिया, अंखियां बनी कटारी सी,
काजर रेख नुकीली पैंनी मारै चोट दुधारी सी,
ऐसी मार बुरी है इनकी भूलैगो सब धंधा।
बन्यो ठन्यो डोलै छैला तू, रूप तेरो है चटकीलौ,
चलै झूमकें चाल छबीलौ, ऐसो है तू मटकीलौ,
कैसेहु नांय बचैगो इनको बड़ो विकट है फंदा।
भगजा यहां ते बेग लाढ़ले, नंदभवन कूं जल्दी सों,
मैया पै लगवाय डिठोना, माथै पै इक चौड़ौ सौ,
मेरी मान सांवरे तू अलबेलो रस को कंदा।।

------o------

गोपी माधुरी

जा परे मोहि मत छुवै सांवरे कारी है जाउंगी।।

तन को कारो मन को कारो
ता पर ओढ़ै कामर कारो
चोरी जारी नाम है कारो
ऐसे कारो कान्हा तो ते बच के जाऊँगी।
सुन ओ गोरी मन की कारी
कारो काजर अंखियां कारी
कारी भौहें पुतरी कारी
कारे केस बिना वेणी ये कैसे गुहावैगी।
तू टेढ़ो तेरी लठिया टेढ़ी
टेढ़ी चाल नजरिया टेढ़ी
टेढ़े सखा मंडली टेढ़ी
दूरै रहियो नाय मैं भी टेढ़ी है जाऊंगी।
टेढ़ी देखै टेढ़ी बोलै
टेढ़ी टेढ़ी बचती डोलै
सूधी कर दूं आ बिन मोलै
हाथ पकर बोल्यो अब कैसे तू बच पावैगी।।